पेड़ों की छाल के वस्त्र पहनकर राम,  लक्ष्मण और सीता ने अयोध्या छोड़ दी। अयोध्या के प्रजा जन उन के रथ के पीछे दौड़ पड़े। राजा दशरथ जी उनके पीछे भागे लेकिन कुछ ही देर में वे अचेत होकर गिर पड़े। तमस नदी के तट पर पहुंचे तो उन्होंने रात्रि विश्राम करने का निश्चय किया। प्रजा जन भी थक गए थे, इसलिए जल्दी ही सब सो गए। राम ने अपने सारथी सुमंत्र से आग्रह किया कि प्रजा जनों के जागने से पहले ही वह उन्हें जंगल में छोड़ आए। उन्होंने अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी और गंगा तट पर पहुंच गए। वहां उनका सामना निषादराज गुह उसे हुआ। गुह ने राम से उसका अतिथि बनने का अनुरोध किया। राम ने विनम्रता से जवाब दिया कि मैं अब सन्यासी का जीवन जीने जा रहे हैं इसलिए वे किसी भी तरह की सुख सुविधा स्वीकार नहीं कर सकते। राम ने सुमंत्र से अयोध्या लौट जाने को कहा। सुमंत ने उन्हीं के साथ चलने का अनुरोध किया लेकिन राम ने उसे वापस जाने और दुखी राजा की सेवा करने को कहा। निषादराज गुह ने राम, लक्ष्मण और सीता को गंगा पार करा दी। सुमंत्र जब अयोध्या लौटे तो उसने पाया कि राम के वियोग में दशरथ अपने प्राण त्याग चुके हैं।